मेरा पन्ना

बहुत पहले की बात है। एक कुटिया में अपनी बच्ची के साथ एक बुढ़िया रहती थी। बुढ़िया एक रोज़ बाज़ार गई और चमाचम भूरी देगची खरीद लाई। थोड़े दिनों बाद बुढ़िया भगवान को प्यारी हो गई। उस समय उस बच्ची की उम्र बारह साल थी। सारा काम-काज़ उसे ही करना होता। दोपहर के खाने से पहले वह बच्ची उस देगची में गर्मा-गर्म कॉफी बनाती और शौक से पीती।

एक रात जब वह लड़की सोने जा रही थी तो उसे कुछ रोने-कराहने की सी आवाज़ सुनाई दी वह ठिठकी। उसने ध्यान से इधर-उधर गौर किया। और तभी उसकी नज़र उस देगची पर पड़ी। उसने देखा कि उस देगची के एक नाक है, मुँह है और दो आँखें हैं जिनसे आँसू टपक रहे थे। यह सब देख लड़की इतना डर गई कि घर छोड़कर निकल भागी। उसके पड़ोस में एक लड़की थी जिसका नाम रीटा था। कुटिया को खाली देख रीटा उसमें रहने लगी। अगले रोज़ उसे देगची ठीक-ठाक हालत में लगी। रीटा ने भी उसमें कॉफी बनाई। गर्म कॉफी को गिलास में डाला और सुड़कने लगी। तभी रीटा ने भी देखा कि देगची सिसक रही है। मगर वह डरी नहीं। वह देगची के पास गई और उससे बातें करने लगी। उसने पूछा कि तुम रोती क्यों हो?

"कोई मेरी साफ-सफाई नहीं करता है। पहले तो उस लड़की की नानी थी मगर उनके मरने के बाद लड़की ने मेरा कोई ध्यान नहीं रखा... मैंने उसे बताना चाहा तो वह मुझे छोड़कर और चली गई।"

सिसकते हुए ही देगची ने जवाब दिया। थोड़ा रुककर वह फिर बोली, "और तो और तुमने भी वही किया... मुझमें कॉफी बनाई और पहली वाली लड़की की तरह मुझे साफ करना भूल गई। अपनी बात कहने के लिए हर बच्चा रोता है कि नहीं...।"

"ठीक है, ठीक है। मैं समझ गई। अब से मैं हफ्ते में तीन बार तुम्हें माँज़ दिया करूँगी।" रीटा ने चुप कराते हुए देगची को समझाया। और रीटा ने अपनी बात भी रखी। मगर एक दिन फिर देगची के सिसकने की आवाज़ आने लगी।

"अब क्या हुआ?" रीटा ने देगची के पास जाकर पूछा।

"कोई मेरे साथ खेलता भी नहीं है। मैं बोर हो जाती हूँ।" देगची बोली। "अरे इसमें क्या बड़ी बात है। मैं तुम्हारे साथ खेला करूँगी।" रीटा ने ढाँढस बँधाया।

"नहीं," देगची तपाक से बोली, "मैं तो किसी देगची के साथ ही खेल सकती हूँ। तुम्हारे साथ खेलने में मुझे क्या मज़ा आएगा?" देगची की बात में दम था। रीटा को बात जँची और वह दूसरी देगची भी ले आई। सुनहरे रंग की।

वे दोनों देगचियाँ रोज़ खेलतीं। रीटा उनमें बारी-बारी से कॉफी बनाती।

लेकिन अब रीटा की परेशानी बढ़ गई क्योंकि उसे अब दोनों देगचियों की साफ-सफाई करनी होती थी। साढ़े तेरह साल की लड़की को तो यह ज़्यादा ही लगेगा क्योंकि हर रोज़ पूरे घर की साफ-सफाई और खाना पकाने का काम रीटा को अकेले करना पड़ता। दूसरा कोई था ही नहीं।

थकी-हारी वह एक दिन यह सोच ही रही थी कि किस देगची की छुट्टी कर दी जाए कि देगचियों के लड़ने की आवाज़ आने लगी। वह उनके पास पहुँची। उन दोनों ने रीटा को बताया कि उसके सो जाने के बाद वे दोनों खूब मस्ती करती हैं। मगर दिक्कत यह है कि वे घूम-फिर नहीं सकती हैं। रीटा ने कहा, "ठीक है, वह उन्हें पहिए लाकर दे देगी। मगर उसके बाद कोई रोना-धोना नहीं होना चाहिए।" रीटा ने कह तो दिया मगर उसे ख्याल आया कि वह उनके लिए पहिए कैसे लाएगी? उसके पास ले-देकर पाँच सौ बीस रुपए बचे थे। उधर देगचियाँ अपनी ज़िद पर अड़ी थीं।

सुबह जब रीता सोकर उठी तो उसने भूरी और सुनहरी देगची को बेचने का फैसला कर लिया जिससे घर में कोई चीख-पुकार न मचे। उन दोनों की जगह वह ऐसी देगची ले

आई जो बोलती-सिसकती नहीं थी। जिस आदमी को उसने वे देगचियाँ बेचीं, वह भी उनके रोने-धोने से परेशान हो गया और उन्हें झाड़ी में फेंक आया।

रीटा अब अठारह साल की है। कुछ कमा भी लेती है। आज भी वह गर्म कॉफी पीने का शौक रखती है। भूरी और सुनहरी देगचियाँ उसके पास नहीं हैं मगर पता नहीं कहाँ से उसे उनके रोने-सिसकने की आवाज़ सुनाई देती रहती है।

चित्र व कहानीः मौलिका शर्मा, चौथी, मुम्बई, महाराष्ट्र

मेरा पन्ना

विजय तेहलानी, भोपाल, म. प्र.

रितिका गौर, पहली, भोपाल, म.प्र.

विवेक गौर, पाँच वर्ष, भोपाल, म. प्र.

एक घर

एक घर था। उसमें मम्मी-पापा और बच्चा रहते थे। उस घर में एक गार्डन था। गार्डन बहुत अच्छा था पर उसमें एक गड़बड़ थी। उसमें एक साँप का घर था। एक दिन बच्चा अपने दोस्त के साथ गार्डन में खेल रहा था। उसके मम्मी-पापा नाश्ता खा रहे थे। उसी टाइम साँप निकल गया। बच्चा बहुत डर गया। उसने मम्मी और पापा चिल्लाया और कहा कि साँप आ गया। पापा दौड़ते आए। उन्होंने कहा - मैं अभी लकड़ी लाता हूँ। साँप आजा बैठें - पापा बोले। साँप डर गया और बिल में भाग गया और बच्चा और उसका दोस्त टीवी देखने लगे।

विभु, पहली, होशंगाबाद, म. प्र.

समृद्धि बावस्कर, पहली

अमृता यादव, पहली, भोपाल, म. प्र.

राशि पटवा, तीसरी, देवास, म. प्र.

खुशी, दूसरी, जगतपुरा, राजस्थान

शिवानी प्रकाश लालगे, पाँच वर्ष, फलटण, महाराष्ट्र

शिवाली घोंडियाल, देहरादून, उत्तराखण्ड